WWJMRD 2017; 3(12): 447-448
www.wwjmrd.com
*International Journal*
*Peer Reviewed Journal*
*Refereed Journal*
*Indexed Journal*
*UGC Approved Journal*
*Impact Factor MJIF: 4.25*
e-ISSN: 2454-6615

**बृजेश कुमार यादव**
शोधछात्र समाजशास्त्र
काशी हिन्दू विश्वविद्यालय
वाराणसीए भारत

**Correspondence:**
**बृजेश कुमार यादव**
शोधछात्र समाजशास्त्र
काशी हिन्दू विश्वविद्यालय
वाराणसीए भारत

# सामाजिक परिवर्तन में मीडिया की भूमिका

**बृजेश कुमार यादव**

## सांराशिका
मीडिया लोकतन्त्र का चौथा स्तम्भ है अगर लोकतन्त्र के तीन स्तम्भ उचित तरीके से अपने अपने उत्तरदायित्व का निर्वहन नही कर पाते तो मीडिया के द्वारा ही उनके उत्तरदायित्व का बोध कराकर लोकतन्त्र को मजबूत किया जाता है। मीडिया एक ऐसा मंच है जहाँ पर साधारण जनता भी अपनी बातो को रखा सकता है। मीडिया का कार्य सरकार की कमीयों को उजागर करना है। और सामाजिक मुद्दों पर सरकार पर दबाव बनाना जिससे सामाजिक परिवर्तन की ओर एक सार्थक पहल हो सके। जब भी मीडिया की बात की जाती है तो उसे समाज में जागरूकता पैदा करने वाले साधन के रूप में देखा जाता है। जो लोगों की सही व गलत करने की दिशा में प्रेरक का कार्य करता नजर आता है। जहां कही भी अन्याय है, शोषण है, अत्याचार, भ्रष्टाचार और छलना है। उन्हे जनहीत में उजागर करना पत्रकारिता का उद्देश्य है। मीडिया ही लोगों तक सामाजिक घटनाओं एवं समस्याओं की सत्यता को पहुँचाती है मीडिया के द्वारा सामाजिक मुद्दों के प्रति जनता का राय लिया जाता है मीडिया के प्रभाव के कारण ही समाज में राजनैतिक सामाजिक इत्यादि परिवर्तन हो रहे है। यहाँ यह कहा जा सकता है कि मीडिया मानव चेतना के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। मीडिया के प्रभाव के कारण समाज के विभिन्न क्षेत्रों में होने वाले परिवर्तन का अध्ययन प्रस्तुत शोध पत्र में किया जायेगा।

**मूल शब्दरू** सामाजिक परिवर्तन, जनमत निर्माण, राजनीतिक परिवर्तन, साक्षरता, लोकतन्त्र

## प्रस्तावना
सूचना और तकनीक ने आज इस युग को एक नये मुकाम पर लाकर खड़ा किया है। आज विश्व के घटित घटनाओं को सीधे अपने कमरे में चाय पिते हुए देख सकते है। देशी तथा विदेशी समाचारों के प्रदर्शन पर अपनी राय भी भेज सकते है। इन सब का श्रेय केवल जनसंचार माध्यमों को जाता है। जो सामाजिक सास्कृतिक परम्पराओं एवं रूढ़ियों की जटीलताओं को निस्तारण करते हुए एक नये समाज की स्थापना कर रहा है। नैतिक मूल्यों के साथ वर्तमान में जिस परिवर्तन का दर्शन कर रहे हैं, उसमें सबसे अधिक श्रेय मीडिया को जाता हैं।

आज लोगों के जीवन शैली में जो परिवर्तन आया है, सामाजिक समस्या, सामाजिक मुद्दों के प्रति लोगों की जागरूकता इत्यादि वह मीडिया परिवर्तन का फल है आज के वर्तमान दौर में व्यक्ति भले ही आभाव में जी रहा है पर मीडिया के माध्यम से हर अच्छे और बुरे पहलू को समझ रहा है। मीडिया लोकतन्त्र के चौथे स्तम्भ के रूप में समाज को मजबुत दशा और दिशा प्रदान कर रहा है। जनहित की रक्षा करने के लिए सरकार पर नियन्त्रण रखते हुए लोकतान्त्रिक प्रक्रिया को मजबूती प्रदान करने का कार्य मीडिया कर रही हैं।

वर्तमान समय में वैज्ञानिक चेतना का विकास के साथ अन्य क्षेत्रों का विकास हो रहा हैं, जिससे खेती और परिवार कल्याण जैसे कार्यक्रम को प्रोत्साहन मिल रहा है खेल का मैदान भी मीडिया से अछुता नहीं है। महत्वपूर्ण तथ्यों की जानकारी एवं स्वास्थ के प्रति जागरूकता का श्रेय मीडिया को जाता है। ग्लोबल वार्मिंग के इस दौर में पिछले एक दशक से जिस उपभोक्ता वादी संस्कृति ने जन्म लिया हैं। उसका प्रभाव आज पूरे विश्व में देखने को मिल रहा हैं हमारी मीडिया भी उससे अछुती नहीं हैं। सामाचार चैनल आज उन्ही समाचारों को दिखाने में ज्यादा रूचि लेते है, जिसे दर्शक देखना ज्यादा पसन्द करते है। भले ही हमारे दिमाग पर उसका कैसा भी प्रभाव पड़े। आज भारत की 80 प्रतिशत जनता मीडिया की बात को सच मान कर चलती है। ऐसे में लोगों की भावनाओं से खेलना मीडिया को अपने कर्तव्य से भटकना माना जायेगा। आज मीडिया समाज को एक सच्चाई का दर्पण दिखाने का प्रयास कर रहा है। भले ही वह अन्ना का अनसन हो या दिल्ली का नीर्भया काण्ड हो। व्यवसायिक प्रतिस्पर्धा की दौड़ में सच्चाई को तोड़ मरोड़ कर प्रस्तुत करना अब आम बात हो गयी है। समय के साथ–साथ समाचार एवं विज्ञापनों को प्रदर्शन में गुणवत्ता की कमी होती दिखाई पड़ती है। मीडिया को अपनी नैतिक जिम्मेदारी का बोध होना चाहिए। जिससे लोकतन्त्र में कार्यपालिका, न्यायालिका, व्यवस्थापिका के समुचित ढंग से कार्य नही करने पर लोकतन्त्र के चौथे स्तम्भ मीडिया को अपनी साकारात्मक भूमिका निभानी चाहिए। आज का सबसे बड़ा सारोकार हैं।

## अध्ययन का उद्देश्य
जब कोई शोध कार्य किया जाता है। तो उस शोध का कोई न कोई उद्देश्य होता है
प्रस्तुत शोध कार्य का उद्देश्य सामाजिक परिवर्तन में मीडिया की भूमिका का अध्ययन करना हैं।

**अध्ययन की परिकल्पना–**
प्रिन्ट मीडिया, इलेक्ट्रानिक मीडिया, सामाजिक मीडिया द्वारा सामाजिक परिवर्तन में महत्वपूर्ण योगदान दिया जा रहा हैं।

**अध्ययन की विधि एवं तथ्य संकलन–**
प्रस्तुत अध्ययन की विधि का स्वरूप विवरणात्मक है। और अध्ययन की विश्वसनीयता पूर्णतयः द्वितीयक सामाग्री (किताब, पत्रिकाएं, सामाचार पत्र, इन्टरनेट, इत्यादि) के विश्लेषण पर आधारित हैं।

**परिणाम–**
प्रस्तुत शोध पत्र में मीडिया के प्रभाव के कारण समाजिक परिवर्तन से सम्बन्धित विभिन्न साहित्य, पत्र–पत्रिका, समाचार पत्र, इन्टरनेट इत्यादि का अध्ययन किया गया। जिसके विश्लेषण एवं निर्वचन के आधार पर निम्नलिखित परिणाम प्राप्त हुए जो क्रमशः निम्नवार

**जनमत निर्माण में मीडिया की भूमिका का अध्ययन–**
जनमत निर्माण में मीडिया एवं सामाजिक मीडिया की भूमिका महत्वपूर्ण हैं। मीडिया लोकतन्त्र में व्यक्ति तथा प्रशासन के विच एक सेतु का कार्य करता है। आज के वर्तमान दौर में प्रिन्टमीडिया, इलेक्ट्रानिक मीडिया, सोसल मीडिया, ये सब जनता की जिज्ञासा को शान्त करते है। सोशल मीडिया जनक्रान्ति का सशक्त माध्यम है जिस गति से समाज बदल रहा हैं। उसमें सोशल मीडिया की भूमिका अहम हैं। समाज का प्रत्येक वर्ग इस पर केन्द्रीत है। यह वर्तमान समय में समाज की दिशा का सूचक है। इससे समाज व देश दोनों सशक्त बन सकता हैं।
सोशल मीडिया के साकारात्मक पहलू से समाज के युवा वर्ग नयी–नयी जानकारी हासील करते हैं। लेकिन इसके कुछ नाकारात्मक पहलू भी है। जो कभी समाज में आपसी द्वेष को बढ़ावा भी देते हैं। जरूरत है। ऐसे नाकारात्मक पहलू को दर किनार करने की जिससे सामाजिक वैमनस्य का बढ़ावा मिलता हो।
मीडिया एवं सोसल मीडिया मानवाधिकार एवं मानवीय न्याय के लिए जनतम तैयार कनने का सशक्त माध्यम है। आज के वर्तमान दौर में किसी भी प्रकार की सामाजिक समस्या होने पर व्यक्ति उसे सामाजिक मीडिया के जरिए बताने का प्रयत्न करता है और जैसे ही ये सामाजिक मुद्दे सामाजिक मीडिया पर आते है इससे जूड़े लोग चाहे किसी भी जाति, धर्म, सम्प्रदाय को हो खुलकर अपने बिचारों को व्यक्त करते है। इस प्रकार जनमत का निर्माण होता है जिससे मीडिया एवं सामाजिक मीडिया द्वारा प्रशासन एवं सरकार तक पहुँचाया जाता है। इसलिए मीडिया एवं सामाजिक मीडिया जनमत निर्माण का एक सशक्त माध्यम है।

**राजनीतिक परिवर्तन में मीडिया की भूमिका का अध्ययन–**
किसी भी देश की राजनीति उस देश की दिशा व दशा को निर्धारित करती है। वर्तमान परिदृश्य में मीडिया राजनीति को गहराई से प्रभावित कर रही है। आज के दौर में प्रत्येक राजनीतिक दल अपनी–अपनी पैठ प्रिन्ट, इलेक्ट्रानिक एवं सोसल मीडिया में बनाने में लगे हुए है। क्योंकि मीडिया का झुकाव जिस राजनैतिक दल या जिस विचारधारा की तरफ होता है उसी तरफ आम जनता का झुकाव होने लगता है। यह कहना अतिश्योक्ति नहीं होगी कि राजनैतिक विचार (राजनैतिक जनमत) के निर्माण में मीडिया की भूमिका महत्वपूर्ण हो गयी है। यहाँ पर मीडिया को भी अपनी नैतिक जिम्मेदारी को देखते हुए पुरी निष्ठा एवं इमानदारी के साथ बिना राजनैतिक प्रभाव के समाजिक मुद्दों समस्याओं एवं वास्तविकता को दिखाना चाहिए। सोशल मीडिया का जमकर इस्तमाल करने वाले प्रधानमंत्री जी ने भी फेसबुक मुख्यालय में कहा की सोशल मीडिया में गजब की ताकत और फायदें है। कोई भी गलत कदम उठाये जाने पर सुधार की आवश्यकता बनी रहती है। मीडिया, सरकार के कमीयों एवं मुद्दों पर सरकार पर दबाव बनाती है। ताकी परिर्वतन हो सके। प्रधानमंत्री जी अपनी मन की बात कहने के लिए इलेक्ट्रानिक मीडिया का प्रयोग करते है। जिससे उनकी बातों को अधिक से अधिक लोगों तक पहुँचाया जा सकें और उन्हें प्रभावित किया जा सकें।
अतः हम यह कह सकते है कि मीडिया अपने दबाव के द्वारा राजनीतिक परिवर्तन करने की क्षमता रखती है क्योंकि मीडिया का झुकाव जिस तरफ होता है तो जनमत का झुकाव भी उसी तरफ होता है। इस लिए मीडिया को अपनी नैतिक जिम्मेदारी के साथ कार्य करना चाहिए।

**साक्षरता के प्रसार में मीडिया का अध्ययन–**
मीडिया द्वारा आम जनता को सक्षरता से जोड़ने का प्रयास जारी रखते हुए आगे बढ़ जाय तो देश की आर्थिक, समाजिक, राजनीतिक एवं सांस्कृतिक विद्रूपता को सन्तुलित किया जा सकता है। भारत जैसे देश में साधारण जनता तक शिक्षा की पहुच लगभग बहुत कम है। उन तक शिक्षा कैसे पहुचाई जाय या उनको शिक्षा के लिए जागरूक कैसे बनाया जाय इन सब के लिए मीडिया एक महत्वपूर्ण साधन है। भारत सरकार की विभिन्न योजनाए जो शिक्षा से सम्बन्धित है जैसे–सर्व शिक्षा अभियान, बेटी पढ़ाओं–बेटी बचाओं इत्यादि इन सभी का प्रचार मीडिया द्वारा किया जा रहा है जिससे लोगों में जागरूकता आये और लोग अधिक से अधिक शिक्षित हो। क्योकि मीडिया, प्रशासन एवं शिक्षा व्यवस्था के कमीयों को उजागर करता है तथा शिक्षा के क्षेत्र में परिवर्तन के लिए बाध्य भी करता है। आजादी के बाद शिक्षा का स्तर अर्थात 1951 में साक्षरता का अनुपात 18.33 प्रतिशत था जिसमें पुरुष साक्षरता 27.16 प्रतिशत तथा महिला साक्षरता 8.86 प्रतिशत थी आजादि के बाद 2011 की जनगणना में शिक्षा का स्तर बढ़ा है। जिसमें साक्षरता का अनुपात 74 प्रतिशत है। पुरुष साक्षरता 82.14 प्रतिशत तथा महिला साक्षरता 65.46 प्रतिशत है ये सब परिवर्तन मीडिया के प्रचार–प्रसार के कारण ही सम्भव हो सके है।

**लोकतन्त्र में मीडिया की भूमिका का अध्ययन–**
लोकतन्त्रीय व्यवस्था को चलाने में मीडिया की भूमिका महत्वपूर्ण है। आधुनिक काल में मीडिया मानव मूल्यों की गरिमा बनाये रखने तथा मनुष्य के सामाजिक एवं राजनैतिक अधिकारों की रक्षा करने का एक सशक्त माध्यम है। इस लिए इगलैण्ड के महान दार्शनीक एवं वक्ता एडमण्ड बर्क ने इसे राष्ट्र का चौथा स्तम्भ कहा है। लोकतान्त्रिक व्यवस्था में लोगों के लिए लोगों द्वारा शासन होता है। लोक तान्त्रिक व्यवस्था में मीडिया सरकार के नीतियों का विश्लेषण समालोचना एवं आलोचना करते हुए इस पर नियन्त्रण बनाये रखती है। मीडिया शासन के सभी अंगों के गतिविधियों से जनता को अवगत कराती है। उसमें जागरूकता लाकर लोक तान्त्रिक संस्थाओं के प्रति अभिरूची पैदा करती है। यह संसद एवं कार्य पालिका को जनता के रूचियों एवं आवस्यकताओं से अवगत कराती है। मीडिया जनता के इच्छाओं एवं आंकक्षाओं को संसद तक पहुँचाती है। जिसके आधार पर तमाम–नीतिगत मुद्दे संसद में तय होते है। कभी–कभी सरकार को अपने स्रोतो से यह ज्ञात नहीं हो पाता की कहाँ–कहाँ उसके साशन में अन्याय एवं अत्याचार हो रहे है। किन्तु मीडिया शासन को ऐसी खामीयों से अवगत कराती रहती है। जिससे सामाजिक परिवर्तन होते रहते है।

**निष्कर्ष**
इस आधुनिक परिदृश्य में मीडिया ने समाज के प्रत्येक अंग को गहराई से प्रभावित किया है। मीडिया सामाजिक जिवन का एक अभिन्न अंग बन गया है। मीडिया द्वारा जहाँ एक ओर समाज क अनेक ज्वलन्त मुद्दों को उठाकर उसे दुर करने के लिए सरकार पर दबाव बनाती है। नीति निर्माण में जनमत संग्रह द्वारा सरकार को सुझाव प्रस्तुत कराती है तथा सरकार पर उन नीतियों की जो जन विरोधी हो उनकी अलोचना करके उन्हें दुर करने का दबाव भी बनाती है। ये सब मीडिया के साकारात्मक पक्ष हुए मीडिया के कुछ नाकारात्मक पक्ष भी है जिसमें मीडिया कभी–कभी एक पक्षीय व्याख्या करते हुए सामाजिक मुद्दों एवं समस्याओं से प्रशासन का ध्यान भटका देती है। आज मीडिया केवल अपनी टी0आर0पी0 बढ़ाने के लिए तथ्यों को तोड़–मरोड़ कर एक मशालेदार न्यूज की तरह पेश करती है। जिससे वास्तवीक समस्या लूप्त हो जाती है। अतः मीडिया को भी अपनी नैतिक दायित्व का ध्यान रखते हुए उसे अपने सिमा के अन्तर्गत रिपोर्टीग करनी चाहिए जिससे समाज में तार्किक ज्ञान का प्रसारण हो लोग वास्तविक मुद्दों एवं घटनाओं की सत्यता को जाने।

**सन्दर्भ ग्रन्थ सूची**


1. दुबे, डा0 श्यामाचरण : सचार और विकास, सूचना और प्रसारण मन्त्रालय, भारत सरकार, 1986।
2. प्रभात रविन्द्रः आम आदमी की ताकत बना सोसल मीडिया, जनसन्देस टाइम्स 5 जनवरी 2014।
3. कुमार, संजयः दलित चेतना में मीडिया, दैनिक जागरण, 15 नवम्बर 2015।
4. चैटर्जी, पी0सी0 : बाडकांस्टिंग इन इण्डिया, सेज पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली, 1987।
5. sumitchouraisaamitylko.blogspot.in/2011/12/blog-post.html?m=1
6. shrajanpath-13.blogspot.in/2014/07/blog-post_18.html?m=1
7. mediakhabar.com/media-role-in-janmat-nirman/
8. www.madhepuratimes.com/2016/12/seminar-on-social-media.html?m=1
9. www.gjms.co.in/index.php/gjms2016/article/view/422